



आशा दास काथ

1.151

ASHA ARCHIVES

ॐ न

यप्रजायायथुत्रिधनकाडासमल्लससिद्धथलयाडास्थान
 दाहातनय॥३॥वेवाचनीयवडयुष्यं पुनियुस्वाहा॥३॥अ
 त्यायवडयुष्यं पुनियुस्वाहा॥३॥नलसंरायवडयुष्यं पुनियु
 स्वाहा॥३॥अमिर्गांरायवडयुष्यं पुनियुस्वाहा॥३॥अमाद्यासि
 द्वियवडयुष्यं पुनियुस्वाहा॥३॥थुलिधनकाडादडायाग्यं चसा

रावना

लिसकरंनं सिद्धस्वायशा मनु॥३॥उद्यागादनचकुनानि
 नधुनायिद्धुगातास्यत्रादगधमिनिगुयागिलाकमदिगा
 यीयुषधत्रापुनावृद्धस्नननसाविखत्रयासानन्दसंदाकन
 रावीरावविचानिभाविनदिवायानादिकां वागुवशा
 थुलिथानास्वा सिद्धस्वायमल्लनि काथमनूभाकसितनी

निया॥ धू लिधूनकाडा यै चया प्रयुजा याय स्त्री विदि ध्वं नय
 धूननय, सिद्धलं गिरक, ऊऊं कानय, स्थान यय, सो जास
 क्रय यय, धलमा यय, मनविय॥ धू लिधूनकाडा यय ॥
 लिदा गय आदि कु गु लिस, स्थान यय, २ नय, ध्वं नय, नि
 मनु नायाय, धन ॥ धनया य॥ पागया धनय, देयानय



न
 दगायां स्त्री धनयाया ~~निधूनकाडा~~ ॥ मंगु॥ उँ आहँ दिँ उँ ॥
 ॥ दधुस॥ उँ ॥ दूडाने॥ आ॥ द्यडा स॥ हँ ॥ लिडाने॥ दिँ ॥
 ॥ ऊडा स॥ द्यँ ॥ अं गिस॥ उँ ॥ धू लिधूनकाडा, धलमधुलधिन
 लंखयुगुनय, जाकि, निग्यसा गनय, सिद्धलं गिरक, ऊऊं कान
 य, स्थान यय, सो जा, सक्रय यय, मनविय, धनयुयकास

याय स्वा न व व रु ना श्वा मे नु ॥ ३ ॥ मा मे कि य क रु पु र्वा पु य
स्वा हा ॥ ३ ॥ उत्ता र नि य व ज पु र्वा पु नि कृ स्वा हा ॥ ३ ॥ पं ड नि य व
ज पु र्वा पु नि कृ स्वा हा ॥ ३ ॥ गो ना य व ज पु र्वा पु नि कृ स्वा हा ॥
धु लि धू न का डा ना य क या ज य या य ना यी पु जा या य जा कि न व
धू ना य जा या य जा कि न पू जा या य धु लि धू न का डा दे डा या न

र नि वा य जा या य धु लि धू न का डा मा रु नि ष्व ध न या य स
ति मि ला स य के न व य स्वा न दा रु त वा य मे णु सि कृ न या
मु र्ध स ति मि ला न दे डा द या वा क थि य का डा मा रु नि रु य ॥
॥ धु लि धू न का डा जा कि क या सा ज न या व ज स त्व वा ना पु
जा या ना श्वा य ॥ ध न अं नि कृ ना रु य ध मे सा ध न या य श्वा
॥ मा रु नि रु य उः मे णु ॥ ३ ॥ उं वं हां यं क्री मां क्री क्री रुं रुं ॥ ३

यच्छि ययाय दडाया नवलि॥ धन आदि काय लिङ्गा चक ॥
धुलि धूनकाठा मंजुल धि चक स्नान वायः कि ग्व निन विस
जन या नकः थ पुजक मयाया॥ ध नं लिः सर्ग क्षेम न ख त्वा
हि धा यिं किया डम याः त्रय हसिः कृ सि मिता ख रु दवा
क स करिनी स्नान चि कि धं २ नयः धू नय निर्म गु नाया

यः धा यिं सा धन यायः॥ ॐ ॥ धन मंजुल धिनः सिद्ध र्मः
निचकः जज कानयः स्ना स्नायः सन्न य स्नायः क्षत्रा मग विय
नाय जय या यता यं पूजा याय जा किल व धू ना पूजा याय
जा कि नं पूजा याय॥ धुलि धूनकाठाः दडा या न स्नान यः
हो न स्यं ता वनाः धू नय निर्म गु नायायः सना न या न क

१ स्वानुपयाय

सिद्धलंतिचकः जजमकानयैः जाः सप्त यश्च यः धः
 यमनं विरयः युष्मन्मासयायः नायजययायानाययूजा
 यायः जाकिल त्वधूनायूजायायः जाकिनयूजायायः ॥ ०००
 स्थलिधूनकाडाः वाक्ययूजायायः दडायागसर्गलोका
 नासर्धश्चायः सिद्धलंतिरियाधनं लिस्मचरु निचा
 मासनिज्ञाना रुय

१ ज्ञानं यननं वसं सलां कावेद्यं ज्ञानं च २ कायचक्रं वाक
 चक्रं चिन्तनं च विष्णुं च नमः ॥ ४॥
 विरयं विरयः धूमिजयमोताजकर्मदलसनागताडागयः
 ॥ १००॥
 धूमिस्तानसिनं पुजा विद्धि समाप्ता ॥
 १ ज्ञायां काकाय धूमः उग्रमधुदने धूनकाडाः दडाज
 लगदया वाक ज्ञायायार्थं पुजायायादिमम्यालः पुजा
 धूनकाडाः दडापुजायः धूमिधूनकाडाः वाक्यपुजाः सधैः

यः माहनिद्यायः सिद्धलं गिरयः धूलिधूनकाडाः सिनिर्से
 तसिचकः बाहिद कांलसिचकः लिप्ताचक सक्तय काय
 धूलिधूनकाडाः यश्च यस्तान् पूजायायः विष्णुर्जनयायः कं
 निस्सीभनियागकः कृत्तिसिमितायाऽभिपथियः रुसियाचः व
 निद्याय धुनि ॥ ॥ ॐ ॥

रथनयंचमलिवायकं थ ॥
 रथथसः झाडं थः स्वाजः मन्त्रपात्र
 रहुडानः झाडं थः काः मन्त्रत्रा
 रथडासः अजिथः चलाताः ~~क~~ नैग्या
 रलिडानः अजिथः श्वेडः काय
 रजडासः अयताः कथनाः कयरोरा
 रवाहिः अजिथः यथा यला खाज

रसिद्रयसः झाडं थः
 रकृत्तिसिमितासः स्वायडिः यत्र
 रजादिकसः अयलाथलाः



मयसे वाजोतं



कलमपुजा



ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ श्रीवज्रसत्त्वावाद्यानिबंज
ननिवाकावंधूनाधूनामहाधूनानिवाकावमहामन्त्रिण
लेनहियथिवि ॥ ॥ ममवज्रसुनावेकाहिनासीत्
मेवयं ॥ वागावपादकायनं मृदवकुमलयमधुलं ॥ ॥
आकाशजायते देवाय ह्ययानमिगाहुरा ॥ वज्रसत्त्ववजा

पायचक्षुःप्रज्ञापानमिगा ॥ वादेनावनजिनाह्वंवा
ममृद्वामिगारु ॥ मकास्यद्वयजागं वलाशे अभाघयद
॥ ॥ ललागस्यवेवाचनदहिनावतसम्भवं ॥ यच्चि
सस्यअमिगारु वामअभाघसिद्धि ॥ ॥ वेवाचनमद
आगिगुह्यवर्तुमहाकलं ॥ वागपावनलस्याम वहुवज्ररु

वल्लहं॥ ॥ यथेयमगुर्वज्जावायवकधलधवंधुरम॥
 पुष्पाह्वानासमानि॥ सर्वगतगगाह्वं॥ ॥ नामा
 ह्वगगाह्वगगगदिगिगगर्ववकुदयः॥ कर्तुं शिष्यवजया
 विजिजावाकुलाकव्यं॥ ॥ सतात्मकमश्लीका
 यः सर्वदाववगवित्कृ॥ ॥ स्वासमपयजायकं वाजसम

कुरुदक॥ रुजददिहज्जाकक रुजवाभश्यनाजिजासूद
 तातादयगीवागुक्कज्जुक्ककुल्लि॥ ॥ ॥ ज्ववद
 दिहवाह्वामवाह्वगकिवाजनीलदलुददिहजान् वा
 मजान्मसावत॥ ॥ ॥ उह्वीववकवल्लिस्वग्नस्यसुय
 नंमम॥ ॥ ज्वकुसम्वाजयागालमसंलिगाहं॥

अथ पञ्चाशदशमोऽध्यायः ॥ चतुर्दशी स माह्वं नाना नका (६)
मद्यमधुलं ॥ ॥ माह्वं निलोचना दधन किमास कि
मागनतिपाशुला ददीना वजन कि ॥ ॥ पृथिवी
लावनाशाना आ यक्ष पुमास की गजाक्षरुयाशुला वायु
गालाप्रकिरिमा ॥ ॥ श्री वज्रसूता वाच ॥ दिव्य वज्र

[illegible]

नमो ब्रह्मदेव्यै नमः ॥ ॐ ह्रीं नमः श्रीं स्वाहा ॥ ॐ वा ॥ घटय ह्रीं २ रु
दृ २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ वं ह्रीं यं किं मां ह्रीं १ ह्रीं ह्रीं ह्रीं २ स्वाहा
॥ जाकि हाज पूजा ॥ ॐ वज्रसत्त्वस्य हा वज्रवलमनरुवं वज्र
धर्मशायन वज्रकर्मकृता वज्रटकि ज १ ह्रीं २ कमला सन
संवाधिसा ॥ ॐ ज १ ह्रीं ३ मं ३ लाधिसाना ॥ मं ३

ॐ आः हं यूथा धिष्ठान ॥ **पूजा** ॥ ॐ श्री वरुह दहनू क प्रवसत्का
लाय या यजू र्ध्व आ वसनं यो क मनं य गिह्वा हा ॥ ॐ स्वस्त्युह
त्यादि ५ ॥ **सिद्धि** ॥ ॐ वरुह गो धस्वा हा ॥ **धूं** ॥ ॐ वरुह धूय स्वा
हा ॥ **ऊं** ॥ ॐ वरुह यूथ स्वा हा ॥ **स्वां** ॥ ॐ वरुह ने व य स्वा हा ॥ **ने** ॥
ॐ वरुह र्था य स्वा हा ॥ ॐ अ का व मू ख सर्व धर्मानां माय नृत्य व

नृत्वा ॥ ॐ आः हं रुह स्वा हा ॥ ॐ आः हं रुह स्वा हा ॥ ॥
॥ ॥ मन्त्राः ॥ हृदय पूतः रुः हाः जि अं वं स्वा हा ॥ पून
ः पितृ भू न्या गां रा वय ॥ ॐ का व ल य म र्गा ऊ नं ॥ मां का व
ह मा म की रु धु दि रु जा व रु घ ष्ट मू डा हं का व ल ना द स्य रु
धु दि रु जा व रु घ ष्ट ह रु ग या सं पू र्जा ग न म हा ना ग न ड

वीरुसंघविहारी॥

॥सर्वरुद्रकामिनि सर्वलक्षधनी॥

गुह्यवज्रितिकाध्वनि॥सर्वदययायिनि॥लक्षधयश्शुभिगु

शुभिगुनूपयविहारी॥

॥उँवज्ररुमहं॥उँवज्रं॥उँवज्रं॥

॥गौं॥लौं॥यौं॥मौं॥काँ॥उँ॥यिँ॥काँ॥वँ॥काँ॥जिँ॥पुँ॥गुँ॥साँ॥सिँ॥नँ॥सिँ॥मँ॥कू॥यी॥०॥

पयी॥०॥कू॥याय॥कू॥र॥हृ॥दाय॥हृ॥दाम॥वाय॥क॥म॥वाय॥क॥क्ष॥क्ष॥य॥क्ष॥

क्षानरुगाशुक्रन्यास॥८॥उँहनमः॥जिः॥स्वाहा॥॥८॥उँहनमव

कूहं॥**हिल**॥उँजागमवकूहं॥**जडा**॥उँआत्मोमलकूहं॥**पडा**॥

क॥ख॥द॥द॥य॥वी॥ऊ॥वा॥हि॥म॥मा॥ला॥रि॥व॥क॥ति॥सं॥रु॥व॥नं॥ग॥ला॥रु॥ग॥शु॥

का॥व॥न॥व॥द॥म॥हृ॥वा॥य॥वि॥रु॥रु॥का॥व॥न॥व॥कं॥आ॥का॥व॥गु॥हृ॥का॥व॥

हृ॥रु॥॥॥का॥वा॥रु॥आ॥लि॥का॥लि॥य॥कि॥क॥य॥गु॥हृ॥व॥क॥रु॥हृ॥व॥हृ॥मू॥

वार्थमदकनयनिनगवकुयमवजवाकविबुद्धिकुर्यात् ॥ ३ ॥ नृप
स्तं धेवेवावन। वदनानस्तं धेवजवा ॥ सल्लानस्तं धेवजसूर्य ॥
विल्लानस्तं धेयमनृत्यस्वन ॥ सर्वतथागकञ्जीरनृकवजिचक्रुषामा
दवजिह्वागय ॥ विसवजिघ्नानय यिष्ठावजिवकुय। नागवजिय
ह्यगमासूर्यवजिस्त्वागयानिधवजि ॥ पृथिविधुपागनि। आय

धुमात्रिनि। गजधुमाकर्मणि वायूधुपमनृत्यस्वन। जाका
हाधुपमहालि। पूनगाज्जलिकालिपकगिमधे। ह्वाकालनयनि
नामनरुगवकं कुरुषरुजं ॥ प्रथमरुजास्याम्वजयल्लमूडाधनं। दि
गीयास्यां वज्जगर्जनियाहा। हगियास्याम्वजयल्लमूडाधनं। वरुम्
ह्वं कुरु ह्वासावकपीगा ॥ काकाह्वाकुरु उवकाह्वा ह्वासा ॥ ३ ॥

नाञ्जान का ॥ सुकनाञ्जानापीता ॥ यमजानिहसुपीता ॥ यमदूतीपी
 कनका ॥ यमदूतीवकञ्जामा ॥ यममथनियञ्जामदूती ॥ विद्वि ॥
 कञ्जसंरुनिमंरुहंरुद ॥ गृह्ण २हंरुद ॥ गृह्णायय २हंरुद ॥ उञ्ज १
 नय १ ॥ रगवनविद्यानाजहंरुद ॥ गृह्ण १ ॥ काञ्ज १ ॥ काञ्ज १ ॥ काञ्ज १ ॥
 यमदूती ॥ कञ्जसंरुनिमंरुहंरुद ॥ गृह्ण १ ॥ काञ्ज १ ॥ काञ्ज १ ॥ काञ्ज १ ॥

मायाजी हातात कोयल हा २३११११—२

नां ऊ व रु ल षु मा षां । व ऊ क ण्डि का नू पे न (घो गी री) व ऊ म य ह मि वि
 हा व य न् ॥ ॥ भ द नी व जी रु व ॥ व ऊ व न्ध वं व ऊ पा का न ण
 ऊ र्वे ह् ॥ उ व ऊ प ऊ र ल ह् ॥ उ व ऊ वी गान ह् ॥ उ व ऊ स व ड
 जानै र्ग सं र्ग ॥ उ व ऊ कालान नार्क ह् ॥ ह् ॥ का न ण जू ष दि ग पा काल
 स नी कू प नि व णि गानि ॥ ॥ मू ढा दि वि घ्रा द य य की ल य न्

घघघाटय २ सर्वदूषानहंरुट् ॥ उँ वज्रकीलय २ सर्वपानहंरुट् ॥
उँ वज्रकीलय वज्रमूजलवज्रधनज्जहाययति. सर्वविघ्नविनाय
मांकायवाक्चिरु. वज्रकीलय ज्जाकाटय माकाटय हंरुट् ॥ १ ॥
ॐ नितिविघ्नविशवयग ॥ गग ४ स्वदय. वीज नहिममालारि न
कनिहंरु वतंगत्वा. गग ह्जुनादिहां सिद्धि ॥ श्रीचक्रसम्बन्धना

वक्ररगवगिसमायंत समादलयं ॥ ह्यानचक्रमाकाहादृष्ट. मरि
मूत्वमरिसंयूक्तसमकसमय. मञ्जुलं प्रवि (हा. नस नही कृत्य ४ मः
नामदीरिश्च पूजादवीरिश्च पूजयत् ॥ १ ॥ हंरुं हंरुं ॥ उँ जीव
जसह नूकयादि ॥ १ ॥ **पूषा न्या** ॥ उँ काका (हा हंरुट् ॥ उँ उ नू
का (हा हंरुट् ॥ उँ ह्मना (हा हंरुट् ॥ उँ हुकना (हा हंरुट् ॥ ४ ॥

ॐ यमजाति य हं रुद्र ॥ ॐ यमदूगी य हं रुद्र ॥ ॐ यमदक्षी य हं रुद्र ॥
ॐ यममथनी य हं रुद्र ॥ ४ ॥ ॐ वल्लभगदावाय स्वाहा ॥ ॐ गंदा
वयि स्वाहा ॥ ॐ कालांकलाय स्वाहा ॥ ॐ कनकरोनवाय स्वाहा ॥ ॐ मूद्रा
दासाय स्वाहा ॥ ॐ लक्ष्मिनननदासाय स्वाहा ॥ ॐ धानांधकावाय
स्वाहा ॥ ॐ किलिशनावाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ वज्रगांधि स्वाहा ॥ ॐ व

जघूय स्वाहा ॥ ॐ वज्रयूथ स्वाहा ॥ ॐ वज्रनेवय स्वाहा ॥ ॐ वज्रवाक्का
य स्वाहा ॥ ॥ **स्वामि** ॥ ॐ सर्वरुद्रानसंदाहं जगदर्थप्रणाद
कं विनामहि नित्यं रूपां श्रीसन्धर्वनमस्तुभ्यः ॥ ॥ **नमो** ॥ ॐ न
मारुगवलेवीनवीनव्ववाय हं रुद्र ॥ ॐ नमस्तुभ्यः कल्याणि सन्नि
हाय हं रुद्र ॥ ॐ यदामकटकटरोनवाय हं रुद्र ॥ ॐ दक्षकलाल

गुरियलमस्वायं हं हृद् ॥ उं सहस्ररुज राखनाय हं हृद् ॥ उं यवहुषा
 क्षिणूलतवांगधोवणीय हं हृद् ॥ उं व्याघ्रचर्मववधनाय हं हृद्
 ॥ उं नभाधूमान्धकानायवपुस्वाय हं हृद् ॥ ॥ तत्तापापदना
 नाकगकालिगततमादिगतद्यमद्विननिदितादासानांप्रतिदक्षया
 सिपुनखंपुनवयवसम्भवंविनधवावकत्वमजिनारुम. जिनहु

कुरुगानिकुशलानिअनूमादिगानिवाधेसंमयकविज्ञानयामिउ
 ननलानिरुयंसुवक्षंजागगाअहिमसर्वरावनवाधिविरुगाविन
 धेसावकअरुनेमार्गगथस्यरूयादिजाग॥ ॥ रागामेगी
 कर्षुनूक्षामदिगायकाचरुवक्तविहानाविशावथरु॥ ॥
 छीहनुकनानगथगगस्यरुर्गु१वह॥ ॥ स्वररावहुजात्यादि

॥ ॥ शुभिजाय ४ ॥

॥ **दलील** ॥ य ॥ उं जी ॥ अ व म नं पां क

म नं व गि छ स्वा हा ॥ ग रु यं का न ह वा य् म छु लं ग द्य नि वं का न ह
मि म छु लं ॥ ग रु छु क काला क हिल सि य अ णं ज नं ॥ ग रु क्का नि य
नि पू नि गं ॥ उं कं आं ॥ उं कं हूं लो मां पां पां वं कां न जा ग पं वा मृ ग यं च
प दि यं मृ यं प ह्य ग ॥

॥ **दलील** ॥ य ॥ उं कं न श क नू श व न्च श

ग ण य श क्का रु य श जी श हूं श द द श प च श क श व सा न धि वि ना क मा
ला व नं वि न गृ क्क श स क या मा न ग ग रु जं ग ह र्थ वा ग ऊं य श आ का ट
य श जी श लो श आं श लो श हूं श किलि श ह्नि नि श धि नि श हूं श रु द् ॥

॥ ह्व ह्व ह्वा दि श मि ष श व न्च श स र्व य क्क वा क्क स रु ग थ क पि ण वा
प सा न जा क जा किं न्या द य श्छ ०० द न्च लि गृ क्क रु स म य व क्क रु

मम सर्वस्वानां च सदा यं रुद्रं वज्रधनञ्छापविद्ययउं ज्ञाष्ट
रुद्रश्चाहा ॥ रायं च प्रहानपूजा ॥ अधर्मा ॥ अकानमस्य कि
प्रवला ॥ हा नाद्वय ॥ ॐ निसमाधिविधिः ॥ ॐ ॥

मा वि मा व वि चार य म प स्य कु त म व डै आ हूँ फू त
स्वा हा श्री म न्य मं द न्य कां ति पू र्ण स द